 ISSN 2581-9917

कहाँ गए वो लोग?

पारुल गुप्ता*

आज के भाग-दौड़ भरे जीवन में उलझते हुए रिश्तों की कहानी अब नयी नहीं लगती है। हम सब एक ऐसे चक्र में फंसे हैं जहाँ अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए साधन जुटाना ही एक मात्र लक्ष्य बन गया है। मकान बड़े और परिवार छोटे हो गए हैं, फोल्लोवेर्स ज़्यादा और दोस्त कम हो गए हैं। ज़िन्दगी में सामान तो बढ़ रहा है पर समय कम हो गया है। ऐसे में यह आश्चर्यजनक नहीं है की सामाजिक व्यवस्थाओं, मूल्यों और रिश्तों में भी परिवर्तन आ रहा है। ऐतिहासिक चरित्रों, घटनाओ और किंवदंतियों को टटोला जाये तो एक बहुत बड़ा अंतर साफ़ दिखाई देता है।

गुरु-शिष्य

स्वामी रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद ने गुरु-शिष्य के रिश्ते को जिस तरह जिया वह आज देख पाना असंभव लगता है। अपने गुरु में ईश्वर को देखना और स्वयं को उसके हवाले कर देना इस परंपरा का आधार था। परन्तु आज अपने गुरु की डांट को सिर माथे लेने वाला, उसकी बात की गहराई समझने वाला और उसके दिखाए मार्ग पर सच्चे मन से अग्रसर होने वाला शिष्य मिलना दुर्लभ है। यह एक बड़ा कारण है हमारी बदलती हुई शिक्षा व्यवस्था का।

मित्र

पृथ्वीराज चौहान और चंद बरदाई ने पूरे विश्व को मित्रता का वास्तविक अर्थ बताया। जीवन पर्यन्त अपने मित्र का साथ निभाना और मृत्यु के समय भी अपने मित्र के आत्मसम्मान की रक्षा करना, ये बिरले लोग ही कर सकते हैं। क्या आज ऐसे मित्र होते हैं जो अपने स्वार्थ से परे आपके हित में सोचें? जो आप के साथ इसलिए ना हों क्योंकि आप उनको कुछ दे सकते हैं, अपितु इसलिए हों की वे आपको सच्चे मन से पसंद करते हैं और अपना मानते हैं। प्राणों से भी प्रिय मित्र आज मिलना असंभव लगता है।

प्रेम

राधा-कृष्ण का पवित्र प्रेम हो या राम-सीता का समर्पण से भरा प्रेम, भारत-भूमि में ऐसे अनगिनत उदाहरण हुए जिन्होंने प्रेम की परिभाषा रची। आज के समय में निस्वार्थ प्रेम देख पाना दुर्लभ है। रिश्ते छोटी-छोटी मुश्किलों से नहीं निकल पाते हैं और कठिन समय में उनका टूट जाना आम बात है। एक दूसरे को सँभालने और जीवन भर हर परिस्थिति में साथ देने वाले लोग बिरले ही होते हैं।

* सहायक प्रोफेसर
इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एवं साईंस (आईटीएस), मोहन नगर।

संतान

हमारे समाज का सबसे बड़ा परिवर्तन जिस रिश्ते में आता दिख रहा है वह है संतान और माता-पिता का। कलियुग में श्रवण कुमार या राम नहीं होंगे परन्तु अपने माँ और पिता को प्रेम व सम्मान देना व उनसे मिले प्रेम और आशीर्वाद को सौभाग्य मानने वाली संतान भी अब कम ही मिलती है। आज कल संतान पिता को पैसे का स्रोत और माँ को नासमझ मानने लगी है। इस दृष्टिकोण से इस रिश्ते की भावनात्मकता कमज़ोर पड़ रही है और मन दूर होते दिख रहे हैं। टूटते हुए घर और बढ़ते हुए वृद्धाश्रम आने वाले समाज का बड़ा चिंताजनक चित्र प्रस्तुत करते हैं।

ये बदलाव अचानक नहीं हुए हैं, एक-एक कर धीरे-धीरे इनके प्रभाव सामने आये हैं और आते भी रहेंगे। समस्या बदलाव नहीं है क्योंकि परिवर्तन नयी चेतना का भी संकेत है अपितु समस्या यह है कि ये परिवर्तन हमारी चेतना, संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था की अधोगति की ओर इंगित कर रहे हैं न कि उन्नति को। यहाँ यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि हम सचेत हो जाएं और प्रयास करें उन रिश्तों को मज़बूत करने के लिए जो हमारे समाज की आधारशिला हैं।

आने वाली पीढ़ियों को एक स्वस्थ समाज देना हमारी ज़िम्मेदारी है। एक बेहतर कल के लिए हम को आज प्रयासरत् होना ही होगा और यही हमारी अपने देश ही नहीं पूरे विश्व के लिए सच्ची सेवा होगी।

◈◈◈

समस्याएं और समाधान

ऐसा कोई इंसान नहीं है जिसने जीवन में कभी किसी परेशानी का सामना न किया हो, कुछ इन परिस्थितियों में टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं, लेकिन कुछ ऐसे होते हैं जो उन टुकड़ों को उठाते हैं और समाधान के मजबूत पत्थरों का निर्माण करते हैं। आत्मविश्वास, कड़ी मेहनत और विवेक के सीमेंट से सफलता की मजबूत इमारत उन टुकड़ों व पत्थरों से बना लेते हैं। ऐसे लोग अपना जीवन तो अद्भुत बनाते ही हैं साथ ही समाज को भी हमेशा के लिए प्रेरित कर जाते हैं।

हम अपने जीवन के स्वयं निर्माता है।

मेजर गुरदीप सिंह सामरा